International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 126-127

''राष्ट्र निर्माण में नैतिक शिक्षा का महत्त्व''

सोनदीप
(शोधार्थी) पी.एच.डी. हिन्दी शोध केन्द्र एस.सी.डी. राजकीय महाविद्यालय लुधियाना, भारत

प्रस्तावना

मूल्य जीवन और समाज की परिव्याप्ति में विशिष्ट सक्रीयता आचरण और व्यवहार का निर्देशन करते हैं, जो व्यक्तिनिष्ठ क्षेत्र में व्यक्ति का भौतिक आचरण और व्यवहारों की अभिव्यक्ति करते हैं, तो समष्टि–परक स्तर पर मूल्यों से पारिवारिकता, सामाजिकता, सांस्कृतिकता, धार्मिकता, राष्ट्रीयता से संबंधित विविध नीतियों का संचालन एवं निर्देशन होता है। किसी भी राष्ट्र में होने वाले निरंतर संघर्ष के कारण वहाँ के मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों में निरन्तर परिवर्तन की एक विशिष्ट अन्तर्धारा विकसित होती है, जिस पर उस राष्ट्र के विध्वंस या निर्माण का भविष्य टिका होता है।

किसी भी राष्ट्र का निर्माण उसके नागरिक के मानवीय मूल्य पर निर्भर करता है। ''मानव मूल्य एक ऐसी आचरण–संहिता या सद्‌गुण समह है, जिसे अपने संस्कारों एवं पर्यावरण के माध्यम से अपनाकर मनुष्य अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन पद्धति का निर्माण करता है, अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। इसमें मनुष्य की धारणाएँ, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति, आस्था आदि समेकित होते हैं।'' [1] उपर्युक्त मानव–मूल्य रूपी अलंकरण से लिप्त नागरिक एक स्वस्थ एवं सुदृढ़–शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। एक ऐसा राष्ट्र जो आत्मबल से भरपूर, विश्व को मार्ग प्रदर्शित करने में समर्थवान सिद्ध हो सकेगा। मूल्य संबंधी उपर्युक्त गुण के अतिरिक्त कुछ अन्य बातें भी हैं, जिसकी अपेक्षा एक राष्ट्र अपने नागरिकों से कर सकता है। वे यह कि उसका नागरिक–

- विवेकपूर्ण व्यवहार के साथ–साथ उदात्त मानवीय भावनाओं से भरपूर हो।
- अन्तर्मानवीय सम्बधों का निर्वाह करने की दक्षता रखता हो।
- सामाजिक नैतिकता में निष्ठा रखता हो।
- अपने सामाजिक कर्त्तव्य के प्रति जागरूक हो।
- अपने सामाजिक कर्त्तव्य के प्रति अपना अधिकार रखता हो।
- शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से स्वस्थ हो।
- स्वतन्त्र निर्णय लेने की क्षमता से युक्त हो।
- मौलिक प्रतिभा का धनी हो।
- जीवन में उपलब्ध जीवन–योग्य विकल्प का चयन कर सकने की योग्यता रखता हो।

उपर्युक्त उल्लेखित बातें यद्यपि किसी भी राष्ट्र के निर्माण के संबंध में हितकर सिद्ध होगी, परंतु यहाँ शोध–पत्र को भारत के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास रहेगा। इस दृष्टि से यहाँ यह भी स्पष्ट करना अपेक्षणीय है कि इस देश की शिक्षा व्यवस्था में वह कौन–सी शिक्षा है, जो इस राष्ट्र की अपेक्षाओं (उपर्युक्त उल्लेखित) पर खड़ा उतरने में समर्थ है? निस्संदेह वह है – 'नैतिक– शिक्षा'। नैतिक शिक्षा किसी बच्चे के मन में मानवतावाद की प्रतिष्ठा करती है। इसके माध्यम से यह संभव है कि बालक को सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिकादि ज्ञान की प्राप्ति हो। यहाँ नैतिक शिक्षा पर चर्चा करने से पूर्व यह आवश्यक है कि शिक्षा, शिक्षा के कार्य और इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला जाए।

विवेकानन्द–''शिक्षा मनुष्य के अन्दर सन्निहित पूर्णता का प्रदर्शन है।'' [2] यहाँ स्वामी विवेकानन्द का यह विचार है कि ज्ञान मनुष्य के भीतर ही है, जिसे वह शिक्षा के माध्यम से प्राप्त करता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का यह विचार है कि ''शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए।'' [3] इस प्रकार शिक्षा ऐसी होने चाहिए जो (एक राष्ट्र के सन्दर्भ में) सर्वप्रथम एक स्वस्थ नागरिक (मनुष्य) का निर्माण करे और उसके बाद एक राष्ट्र (समाज) का। यहाँ डॉ. कृष्णन अप्रत्यक्ष रूप से नैतिक शिक्षा पर ही बल देते हैं, जिसका परम् लक्ष्य है–'मनुष्य निर्माण'। और इस निर्माण की ओट में राष्ट्र–निर्माण की आकांक्षा भी निहित है।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य विद्वानों की परिभाषाएं प्रस्तुत की जा रही हैं, जिन्होंने अपना मत तो यद्यपि शिक्षा के अर्थ, कार्य एवं उद्देश्य के संबंध में देते दीखते हैं परंतु भाव में व्यक्ति को नैतिक रूप से ही सबल बनाना है। इस संबंध में डेनियल वेबस्तर का कहना है– ''शिक्षा का कार्य भावनाओं को अनुशासित, आवेगों को नियंत्रित, वेदनाओं को उत्तेजित तथा धार्मिक भावनाओं को विकसित करना है।'' [4]

श्रवीद क्मूमल जहाँ यह मानते हैं कि ''शिक्षा का कार्य असहाय प्राणी के विकास में सहायता पहुँचाना है जिससे वह सुखी, नैतिक व कुशल मानव बन सके'' [5], वहीं Spencer कहते हैं– ''मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता एवं सबसे बड़ा लक्ष्य– चरित्र है शिक्षा नहीं।'' [6] इस प्रकार श्रवीद क्मूमल यदि मानव को सुखी, नैतिकतापूर्ण, कुशल मानव देखना चाहते हैं, वहीं Spencer चरित्र निर्माण को शिक्षा का परम् लक्ष्य; क्योंकि शिक्षा के माध्यम से मनुष्य के चरित्र का निर्माण ही होगा आखिर! और मनुष्य का चरित्र–निर्माण राष्ट्र–निर्माण हेतु स्वयंसिद्ध होगा।

चरित्रवान व्यक्ति अपने जीवन में जो भी कार्य करता है, वह उसके आदर्शों एवं सिद्धातों के अनुसार होता है। प्रसिद्ध जर्मन शिक्षाविद् हरबर्ट की यह मान्यता है कि व्यक्ति और समाज दोनों का स्थायी कल्याण उच्च कोटि के नैतिक चरित्र से ही संभव है। वे कहते हैं कि ''शिक्षा के समस्त कार्यों को एक ही शब्द में प्रकट किया जा सकता है और यह शब्द है – ''नैतिकता''। [7]

"The one and the whole work of Education may be summed in the concept of Morality".

शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह मानव के प्रवृत्तियों का परिमार्जन करे जिससे उसके आचरण नैतिक बन जाए।

''शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण मानव का विकास है।'' [8] पाश्चात्य विचारक पेंथर के कहे ये शब्द व्यक्ति के अन्तर्मन में दृढ़ इच्छा शक्ति को जागृत करता है, परंतु यह इच्छा शक्ति राष्ट्र–निर्माण हेतु सकारात्मक तभी सिद्ध हो सकते हैं जब मानव मूल्यों के महत्त्व को समझे। ''मानव–जीवन आज विकास और विनाश की जिन सम्भावनाओं व आशंकाओं से गर्भित है, उससे यह स्पष्ट है कि आगामी शताब्दियों में मानव अंतरिक्ष भेदी अतिमानव के रूप में विकास भी कर सकता है और अपनी बनाई विनाशकारी शक्तियों का ग्रास बन कर फिर से यायावटी जीवन वृत्ति की ओर लौटने

पर विवश भी हो सकता है।'' [9] इस प्रकार यह संभव है कि विकास के रास्ते पर चलते हुए इस विकास की आड़ में मानव पतन के रास्ते पर अग्रसर है। इस भटकाव से मानव को सिर्फ एक ही चीज बचा सकती है वह है – नैतिकता, मानव–मूल्य आदि। परन्तु यह नैतिकता मनुष्य में अन्तर्निहित सद्गुण पर ही निर्भर करता है जो नैतिक–शिक्षा के माध्यम से मनुष्य को प्राप्त होता है। हरबर्ट ने शिक्षण के उद्देश्य में भी इस बात का जिक्र किया है– ''शिक्षण का महान और अंतिम उद्देश्य सद्गुणों के विकास की धारणा में निहित है।'' [10]

इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि शिक्षा के अर्थ, कार्य तथा उद्देश्यों में इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि इन तीनों के मध्य विभाजन रेखा खींच पाना सरल कार्य नहीं। फिर भी इन तीनों को अच्छी तरह समझने के लिए यह प्रायः स्पष्ट किया जाता है कि शिक्षा का अर्थ है – शिक्षा क्या है? शिक्षा के कार्यों का अर्थ है–शिक्षा क्या करती है? और शिक्षा के उद्देश्यों का अर्थ है–शिक्षा को क्या करना चाहिए? प्रस्तुत शोध–पत्र के विषयानुसार इन तीनों प्रश्नों का सारगर्भित उत्तर दिया जा सकता है–

- मूल्यों का नैतिक मूल्य।
- नैतिक मूल्य का निर्माण या चरित्र–निर्माण।
- नैतिक मूल्य या चरित्र निर्माण करना चाहिए।

परन्तु यहाँ प्रश्न यह उठ सकता है कि उस शिक्षा को क्या कहा जाए जिससे उपर्युक्त लक्ष्य की प्राप्ति हो? उत्तर स्वरूप नैतिक शिक्षा कहा जा सकता है।

"Value Education is the training of heart." [11]

यह विदित है कि नैतिक शिक्षा किसी के मन में मानवतावाद की प्रतिष्ठा करती है। इस प्रकार की शिक्षा के माध्यम से यह भी संभव है कि इससे व्यक्ति को सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक ज्ञानादि की प्राप्ति हो। इसके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति हेतु क्या सही है और क्या गलत, जो वह अपने संस्कृति से प्राप्त करता है। ये सभी चीजें उसे अपने से विलग रहने वाले मनुष्य के व्यवहार को समझने में सहायता प्रदान करती है। इस प्रकार जब व्यक्ति अपने से अलग रहने वाले व्यक्तियों को समझने लगेगा तो अवश्य ही उससे मेल–जोल, भाई–चारा बढ़ेगा जो भारत जैसे राष्ट्र के ठोस निर्माण हेतु जोड़ का काम करेगा।

किसी भी राष्ट्र के लिए नैतिक शिक्षा एक ऐसा हथियार है जो उसे विश्वस्तर पर एक विशेष छवि प्रदान करता है।

"Value Education is the process by which people transmit values to others." [12]

नैतिक शिक्षा हेतु व्यक्ति की उम्र, वर्ग या शिक्षा देने हेतु किसी विशेष स्थान की तलाश नहीं होती है और न ही आवश्यकता। यह बचपन से घर–परिवार में, स्कूल में, कॉलेज में, विश्वविद्यालयों में यहाँ तक कि जेल में भी दी जाती है।

"Value Education can be take place at home as well as in school, colleges, Universities and even in Jails." [13]

नैतिक शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए ही तो कहा गया है – "Instruction ends in the school room but education ends only with life." vkSj viator Hugo dk dFku gS&"He who opens the school door closes a prison."

शिक्षा तथा नैतिक शिक्षा इन दोनों की प्रकृति पर विचार करते हुए, राष्ट्र निर्माण के सन्दर्भ में, यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति के जीवन में नैतिक मूल्य ही वह जीवन दृश्य है, जिससे मानव संस्कृति रूपी वृक्ष पल्लवित, पुष्पित और प्रफुल्लित होता है। मनुष्य के लिए नैतिक मूल्य (शिक्षा) का प्रत्यय इच्छा की पूर्ति एवं जैविक तथा शारीरिक हित से अधिक उच्च एवं उदार होना चाहिए। इसी आधार पर लोक हित, लोक कल्याण और बहुजन हिताय आदि सर्वोच्च मूल्य स्वीकार किय जाते हैं। इसी से नैतिक मूल्य चिरंजीवी एवं शाश्वत रहते हैं, जो किसी भी राष्ट्र के निर्माण हेतु सकारात्मक पहलू सिद्ध हो सकते हैं।

सहायक ग्रंथ सूचीः

1. डॉ. नत्थूलाल गुप्त, 'संस्कृति और मानव मूल्य', 'परिशोध', पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, अंक–51, 1993.
2. एन.आर.स्वरूप सक्सेना, 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त', आर.एल. बुक डिपोट, मेरठ, 2011.
3. एम.एल.मित्तल, 'उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक', इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2007.
4. डॉ. गिरीश पचौरी, 'उदयमान भारतीय समाज में शिक्षक', लायल बुक डिपो, मेरठ, 2006.
5. शशीप्रभा शर्मा, 'अपचारी बालक', कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीयब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2009.
6. N. Vankataiah (Prof.) r Sandhya (Dr.), "Research in Value Education', APH Publishing Corporation, New Delhi, 2002.
7. K.L. Shrimati, 'Education in Changing India', Asia Publishing House, New Delhi. 1965.
8. कामिनी कामायनी, 'भारतीय जीवन मूल्य', ज्ञान गंगा, दिल्ली–2001.
9. सच्चिदानन्द सिन्हा, 'भूमंडलीकरण की चुनौतियाँ, 'बाजी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005.

सन्दर्भ ग्रंथ सूचीः

1. गुप्त, डॉ. नत्थूलाल, 'संस्कृति और मानव मूल्य', 'परिशोधः चण्डीगढ़ः पंजाब विश्वविद्यालय, अंक–51, 1993, पृ.–111.
2. मित्तल, एम.एल., 'उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक', मेरठ, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2007, च.10
3. सक्सेना, एन.आर.स्वरूप, 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत' मेरठ, आर. लाल बुक डिपोट, 2011, P.25-
4. मित्तल, एम.एल., 'उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक', मेरठ, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2007, च.10
5. सक्सेना, एन.आर.स्वरूप, 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत' मेरठ, आर. लाल बुक डिपोट, 2011, च.10.
6. सक्सेना, एन.आर.स्वरूप, 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत' मेरठ, आर. लाल बुक डिपोट, 2011, च.162.
7. सक्सेना, एन.आर.स्वरूप, 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत' मेरठ, आर. लाल बुक डिपोट, 2011, च.160.
8. सक्सेना, एन.आर.स्वरूप, 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत' मेरठ, आर. लाल बुक डिपोट, 2011, च.25.
9. गुप्त, डॉ. नत्थूलाल, 'संस्कृति और मानव मूल्य', 'परिशोधः चण्डीगढ़ः पंजाब विश्वविद्यालय, अंक–51, 1993, च.25.
10. सक्सेना, एन.आर.स्वरूप, 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत' मेरठ, आर. लाल बुक डिपोट, 2011, च.161.
11. http://NCTE-INDIA-ORG/PUB/RIMSE/SPK11.html, Seen on-22/11/2013.
12. iwoksZDr
13. http://en.m.wikipedia.org/wiki/values-education-Seen on-22/11/2013